

## व्यक्तित्व के निर्धारक Determinants of Personality

व्यक्तित्व के निर्धारक से तात्पर्य कुछ उन कारकों से होता है जिनसे व्यक्तित्व का विकास तथा उसकी दिशा प्रभावित होती है। मनोवैज्ञानिकों ने इन कारकों को मोटे तौर पर तीन सामान्य भागों में बाँटा है जो इस प्रकार हैं -

- 1 ⇒ जैविक या दैहिक निर्धारक
- 2 ⇒ मनोवैज्ञानिक निर्धारक
- 3 ⇒ पर्यावरणी निर्धारक

### 1. जैविक या दैहिक निर्धारक (Biological and Physical determinants)

जैविक या दैहिक निर्धारक से तात्पर्य स्पष्टतः वैसे कारकों से होता है जो आनुवंशिक होते हैं तथा जो जन्म या जन्म के पहले गर्भाधारण से ही व्यक्तित्व में मौजूद होते हैं तथा व्यक्तित्व विकास को दिशा को प्रभावित करते हैं। जैविक कारकों में निम्नांकित को प्रमुख निर्धारक माना गया है -

- (i) शरीर संरचना तथा शारीरिक स्वास्थ्य
- (ii) शरीर रसायन एवं अंतःस्रावी ग्राही
- (iii) स्नायुमंडल
- (iv) समस्यता
- (v) शारीरिक नियंत्रण

i = शारीरिक संरचना तथा शारीरिक स्वास्थ्य  
(Physique and Physical health) ⇒ शारीरिक संरचना से तात्पर्य शरीर के रंग, गठन आदि से होते हैं जिस व्यक्ति की शारीरिक संरचना सुंदर होती है उसका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा होता है। व्यक्तित्व के इन शारीरिक शीलगुणों तथा स्वास्थ्य का प्रभाव मानसिक शीलगुणों के विकास पर भी पड़ता है। व्यक्ति के शारीरिक संरचना से सम्बंधित में सभी शीलगुण वंशानुगत होते हैं।

ii = शरीर रसायन एवं अंतःस्रावी ग्रन्थियाँ (

Body Chemistry and endocrine glands) ⇒ प्रायः

ऐसा देखा जाता है कि कभी कभी हमलोग बहुत सक्रिय हो जाते हैं तथा कभी कभी बहुत ही निष्क्रिय (Passive) और साथ ही साथ विषादी (Depressed) भी हो जाते हैं। इसका कारण यह है कि हमारे शरीर में रासायनिक परिवर्तन होते हैं जिसका नियंत्रण कुछ ग्रन्थियों द्वारा की जाती है। मानव शरीर में दो तरह की ग्रन्थियाँ होती हैं -

बाह्यः स्रावी ग्रन्थि (Exocrine Glands) या नलिका ग्रन्थि (Duct Gland) तथा अंतःस्रावी ग्रन्थियाँ (Endocrine Glands) या नलिकाहीन ग्रन्थियाँ (Ductless)। बाह्यः स्रावी ग्रन्थि का महत्व व्यक्तित्व के निर्धारक के रूप में कुछ भी नहीं है क्योंकि इसका प्रभाव व्यक्तित्व

के विकास पर नहीं पड़ता है। अशुभ ग्रांथि (Toxin Gland) लार ग्रांथि वृद्धि: स्त्री ग्रांथि के उदाहरण है।

अन्तःस्त्री ग्रांथियों का महत्व व्यक्तित्व के निर्धारक के रूप में काफी अधिक है। इससे निकलने वाले स्त्राव को हार्मोन कहा जाता है जो सीधे खून में मिल जाता है और व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करता है। शु पीयुष ग्रांथि, एंडीनल ग्रांथि कण्ठ ग्रांथि, उपकण्ठ ग्रांथि, पैन्क्रियाज, यौन ग्रांथि इत्यादि

### iii स्नायु मंडल (Nervous System) ⇒ व्यक्तित्व

के जैविक निर्धारकों में स्नायु मंडल का स्थान प्रमुख है। मनोवैज्ञानिकों का सामान्य विचार यह है कि नजिन व्यक्तियों का स्नायु मंडल अधिक विकसित तथा जटिल होता है उसकी बुद्धि अधिक होती है तथा उसमें परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता भी अधिक होती है। ऐसी व्यक्तियों या बच्चों के प्रति समाज के अन्य लोगों की मनोवृत्ति (favourable) होती है और इन लोगों द्वारा प्रशंसा अधिकतर समय में की जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि ऐसे व्यक्तियों में सामाजिक शील-गुण जैसे - उत्तरदायित्व, समयनिष्ठा, सांवेगिक स्थिरता, आत्म विश्वास, अहम् शक्ति आदि का विकास तेजी से होता है। दूसरी तरफ यदि व्यक्ति का स्नायुमंडल कम विकसित होता है तो वैसी अवस्था में व्यक्ति की व्यक्तित्व कम बुद्धि

का होता है तथा उसकी अभिव्यक्ति क्षमता भी काफी कम होती है फलस्वरूप समाज के अन्य व्यक्तियों उसे उपेक्षा एवं घृणा की नजर से देखते हैं।

IV - समस्थिति (Homeostasis) ⇒ समस्थिति

का व्यक्तित्व पर काफी प्रभाव पड़ता देखा गया है। समस्थिति से तात्पर्य शरीर के आन्तरिक वातावरण अर्थात् रक्त में चीनी का स्तर, जल संतुलन, आक्सीजन उपयोग, तापक्रम आदि में एक स्थिर समन्वय से होता है। जब इनमें से किसी भी एक या एक से अधिक कारकों में गड़बड़ी उत्पन्न हो जाती है, तो समस्थिति विपन्न हो जाती है। छोटे व्यक्तित्व काफी प्रभावित हो जाता है। जब व्यक्तित्व में समस्थिति काममें होती है तो व्यक्तित्व शांत, नियंत्रित तथा सामाजिक रूप से बांधनीय व्यवहार करता देखा जा सकता है। जब उसकी समस्थिति में गड़बड़ी हो जाती है तो व्यक्तित्व में चिड़चिड़ापन, अपच तथा अन्य लक्षणीय अवस्थाएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

(V) शारीरिक नियंत्रण (Bodily Control) ⇒

उत्तम शारीरिक नियंत्रण को एक व्यक्तित्व एवं सामाजिक सम्पत्ति मानी गयी है जो व्यक्तित्व के आत्म संप्रत्यय के निर्माण में गंभीर भूमिका योगदान करता है। सभी उम्र या आयु के व्यक्तियों में

उत्तम शारीरिक नियन्त्रण आत्म संप्रत्यय के विकास में वे तरह से योगदान करता है. पहला इससे व्यक्ति में आत्म विश्वास उत्पन्न करता है जिसकी अभिव्यक्ति शांत मन से भरोसा दिलाने, सन्तुलन बनाये रखने तथा इस विश्वास के साथ किसी नयी चीज को करने की कोशिश से होती है ताकि इसमें निपुणता प्राप्त की जा सकती है. धीरे-धीरे इस तरह का आत्म विश्वास उन परिस्थितियों में भी सामाजिक हो जाता है जहाँ पेशीय नियन्त्रण की आवश्यकता नहीं होता है। दूसरा उत्तम शारीरिक नियन्त्रण सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति में सुरक्षा की भाव उत्पन्न करता है। इसका परिणाम यह होता है कि सामाजिक परिस्थिति में व्यक्ति अपने ऊपर से ध्यान हटाकर दूसरो पर दे पाता है। जिससे उत्तम सामाजिक समापोजन कायम हो पाती है।

## 2 - मनोवैज्ञानिक निर्धारक

( Psychological Determinants )

व्यक्तित्व के मनोविज्ञान के क्षेत्र में किम गार (Kurt Lewin) से यह स्पष्ट हुआ है कि व्यक्तित्व के कुछ निर्धारक ऐसे हैं जिन्हें सम्बन्ध जैविक न होकर मनोवैज्ञानिक है। उनमें वे व्यक्तित्व के शील-गुणों, चित्त प्रकृतियों आदि के विकास को प्रभावित

करते हैं। ऐसे कुछ प्रमुख निर्धारक निम्नांकित हैं —

- (i) बौद्धिक निर्धारक (Intellectual Determinants)
- (ii) सांवेगिक निर्धारक (Emotional Determinants)
- (iii) लिंग निर्धारक (Sex Determinants)
- (iv) आकांक्षा एवं उपलब्धि संबंधी निर्धारक (Aspirations and achievement Related determinants)

3 - पर्यावरणी निर्धारक (Environmental Determinants) :- पर्यावरणी निर्धारण से तात्पर्य वैसे कारकों से होता है जो व्यक्ति के जीवन काल में मौजूद होते हैं और उनके व्यक्तित्व के विकास की दिशा एवं माला को प्रभावित करते हैं। इसे सामाजिक सांस्कृतिक निर्धारण भी कहा जाता है क्योंकि ये सभी कारक व्यक्ति के सामाजिक संस्कृति में मौजूद होते हैं। इसके तहत उल्लेखित कारकों को मुख्यतः निम्नांकित तीन सामान्य भागों में बांटा गया है —

- (i) सामाजिक निर्धारक (Social determinants)
- (ii) शैक्षिक निर्धारक (Educational determinants)
- (iii) पारिवारिक निर्धारक (Family determinants)